International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(1): 217-218

International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(1): 217-218
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-11-2021
Accepted: 24-12-2021

सरोज देवी
संस्कृत अध्यापिका,
रा0 व0 मा0 वि0 लूखी,
जिला रेवाडी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
सरोज देवी
संस्कृत अध्यापिका,
रा0 व0 मा0 वि0 लूखी,
जिला रेवाडी, हरियाणा, भारत

पंचतन्त्र एवं उसके विभाग

सरोज देवी

प्रस्तावना

पंचतन्त्र एक विश्वविख्यात कथा ग्रन्थ है। इस ग्रंथ में राजनीति के पांच तंत्र (भाग) हैं। इसी कारण से इसे पंचतन्त्र कहा जाता है। पंचतन्त्र के मूल लेखक विष्णु शर्मा है। पंचतन्त्र में गद्य–पद्य रूप में कथाएँ दी गयी हैं जिनके पात्र मुख्यतः पशु–पक्षी हैं। भारतीय साहित्य की नीति–कथाओं का विश्व में महत्वपूर्ण स्थान है। पंचतंत्र उनमें प्रमुख है। उपदेशप्रद भारतीय पशुकथाओं का संग्रह जो अपने मूल देश तथा पूरे विश्व में व्यापक रूप से प्रसारित हुआ। स्वयं नारायण पण्डित जी ने स्वीकार किया है कि पंचतन्त्र ही हितोपदेश की रचना का आधार है।

पंचतंत्रात्तथाऽन्यस्माद् ग्रन्थादाकृष्य लिख्यते।। [1]

पंचतन्त्र का स्वरूपः पंचतन्त्र में पांच तन्त्र या विभाग है। (पंचानाम् तन्त्राणाम् समाहारः– द्विगुसमास) विभाग को तन्त्र इसलिए कहा गया है क्योंकि इनमें नैतिकतापूर्ण शासन की विधियां बतायी गयी है। ये तन्त्र है मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति (मित्रलाभ), काकोलूकीयम् (सन्धि–विग्रह), लब्धप्रणाश एवं अपरीक्षितकारक। उपरोक्त इन तंत्रों की विषयवस्तु इस प्रकार है।

मित्रभेदः (मित्रों में मनमुटाव एवं अलगाव)

त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले धैर्यात्कदाचित् गतिमाप्नुयात्सः [2].

धैर्य से व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थिति का भी सामना कर सकता है। अतः प्रारब्ध के बिगड जाने पर भी धैर्य का त्याग नहीं करना चाहिए। 'मित्रभेद' नामक इस प्रथम तंत्र में अंगीकथा के पूर्व दक्षिण में महिलारोप्य के राजा अमरशक्ति की कथा दी गई है जिसमें यह बताया गया है कि वे अपने मूर्ख पुत्रों के लिए चिन्तित थे। इसलिए वे विष्णु शर्मा नामक विद्वान को अपने पुत्रों को शिक्षित करने के लिए सौंप देते हैं और विष्णु शर्मा उन्हें छः मास में ही कथाओं के माध्यम से सुशिक्षित करने में सफल होते हैं। मित्रभेद नामक भाग की अंगी–कथा में एक दुष्ट सियार द्वारा पिंगलक नामक सिंह के साथ संजीवक नामक बैल की शत्रुता उत्पन्न कराने का वर्णन है जिसे सिंह ने आपत्ति से बचाया था।

मित्रसम्प्राप्तिः (मित्र प्राप्ति एंव उसके लाभ)

इस तंत्र में मित्र की प्राप्ति से कितना सुख एवं आनन्द प्राप्त होता है वह कपोतराज चित्रग्रीव की कथा के माध्यम से बताया गया है। विपत्ति में मित्र ही सहायता करता है।

सर्वेषामेव मर्त्यानां व्यसने समुपस्थिते। [3]
वाड्.मात्रेणापि साहाय्यं मित्रादन्यो न संदद्ये।।

सभी मनुष्यों के विपत्ति में पड़ने पर, मित्र के सिवाय कोई दूसरा मनुष्य वाणीमात्र से भी सहायता नहीं करता।

सुहृदो भवने यस्य समागच्छन्ति नित्यशः। [4]
चित्ते च तस्य सौख्यस्य न किंचत्प्रतिमं सुखम्।।

प्रायः जिसके घर में मित्र आते रहते हैं उसके अन्तःकरण (मन) मित्र के समान अन्य कोई सुख नहीं है। इस प्रकार इस तंत्र का उपदेश यह है कि उपयोगी मित्र ही बनाने चाहिए जिस प्रकार कौआ, कछुआ, हिरण और चूहा मित्रता के बल पर ही सुखी रहे।

काकोलूकीयः (कौवे एवं उल्लुओं की कथा)
इस तन्त्र में युद्व और संधि का वर्णन करते हुए उल्लुओं की गुहा को कौओं द्वारा जला देने की कथा बतायी गई है। स्वार्थ सिद्दि के लिए शत्रु को भी मित्र बना लेना चाहिए और बाद में धोखा देकर उसे नष्ट कर देना चाहिए। इस तंत्र में कौआ उल्लू से मित्रता कर लेता है और बाद में उल्लू के किले में आग लगवा देता है। इसलिए शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए क्योंकि जो मनुष्य आलस्य में पड़कर स्वछन्दता से बढ़ते हुए शत्रु और रोग की उपेक्षा करता है और उसे रोकने की चेष्टा नहीं करता वह क्रमशः उसी (शत्रु अथवा रोग) से मारा जाता है।

य उपेक्षेत शत्रु स्वं प्रसरस्तं यदृच्छया। [5]
रोग चाऽलस्यसंयुक्तः स शनैस्तेन हन्यते।।

लब्धप्रणाशः (हाथ लगी चीज का हाथ से निकल जाना)
इस भाग में वानर और मगरमच्छ की मुख्य कथा है और अन्य कथाएं हैं। इन कथाओं में यह बताया गया है कि लब्ध अर्थात अभीष्ट की प्राप्ति होते होते कैसे कैसे रह गई अर्थात नष्ट हो गई। इसमें वानर और मगरमच्छ की कथा के माध्यम से शिक्षा दी गई है कि बुद्विमान अपने बुद्विबल से जीत जाता है और मूर्ख हाथ में आई हुई वस्तु से वंचित रह जाता है। अतः सत्य कहा गया है–

बुद्विर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्वेस्तु कुतो बलम्। [6]
पश्य सिंहो मदोन्मतः शशकेन निपातितः।।

अपरीक्षितकारकः (जिसको परखा नहीं गया हो उसे करने से पहले सावधान रहें; हड़बड़ी में कदम न उठायें)
पंचतन्त्र के इस भाग में विशेषरूप से विचार पूर्वक सुपरीक्षित कार्य करने की नीति पर बल दिया है क्योंकि अच्छी तरह विचार किए बिना एंव भली भांति देखे सुने बिना किसी कार्य को करने वाले व्यक्ति को कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती अपितु जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । इस भाग की मुख्य कथा में बिना सोचे समझे अन्धानुकरण करने वाले एक नाई की कथा है जिसको मणिभद्र नाम के सेठ का अनुकरण कर जैन–सन्यासियों के वध के दोष पर न्यायधीशों द्वारा मृत्युदण्ड दिया गया। अतः बिना परीक्षा किए हुए नाई के समान अनुचित कार्य नही करना चाहिए–

कुदृष्टं कुपरिज्ञातं कुश्रुतं कुपरक्षितम्।। [7]
तन्नरेण न कर्तव्यं नापितेनात्र यत् कृतम्।।

पूरी जानकारी के बिना कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार ब्राहम्ण पत्नी ने बिना कुछ देखे खून से लथपथ नेवले को यह सोचकर मार दिया कि इस ने मेरे पुत्र को खा लिया है वस्तुतः नेवले ने तो सांप से बच्चे की रक्षा करने के लिए सांप को मारा था जिससे उसका मुख खून से सना हुआ था। इसलिए कहा गया है–

अपरीक्ष्य न कर्त्तव्यं, कर्त्तव्यं सुपरीक्षितम्। [8]
पश्चाद्भवति सन्तापो ब्राहमण्या नकुले यथा।।

निष्कर्ष
निष्कर्षतः स्पष्टरूप में कहा जा सकता है कि पंचतंत्र एक नीति शास्त है– नीति का अर्थ जीवन में बुद्विपूर्वक व्यवहार करना है, चतुरता और धूर्तता नहीं, नैतिक जीवन वह जीवन है जिसमें मनुष्य की समस्त शक्तियों और सम्भावनाओं का विकास हो। इस प्रकार पंचतंत्र में चतुर एवं बुद्विमान पशु–पक्षियों के कार्य व्यापारों से संबंध कहानियां ग्रंथित की गई है। पंचतंत्र की परम्परा के अनुसार भी इसकी रचना एक राजा के उन्मार्गगामी पुत्रों की शिक्षा के लिए की गई है और लेखक इसमें पूर्ण सफल रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हितोपदेश (नारायण पण्डित)
2. मित्रभेद, श्लोक–345।
3. मित्रसंप्राप्ति, श्लोक–12
4. मित्र संप्राप्ति, श्लोक–18।
5. काकोलूकीय, श्लोक–02।
6. चाणक्य नीति
7. अपरीक्षित कारक–श्लोक –01।
8. अपरीक्षित कारक–श्लोक–17।